दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VI (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): DEVENDRA PRAKASH MEENA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 6 8 07/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	1	3	4	4	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): DPMeena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

Section–A

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) जी जै न ठाँउ न आपन गाँउ, सुरालयहू को न संबल मेरे।
नाम रटो, जमवास क्यों जाउँ, को आइ सकै जम-किंकर नेरे।
तुम्हरो सब भाँति, तुम्हारिय सौं, तुम्ही, बलि हौ मोकों ठाहरु हेरे।
बैरष बाँह बसाइए पै, 'तुलसी' घरु ब्याध अजामिल खेरे।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश रामभक्ति काव्यधारा के कवि तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली से लिया गया है।

इस पद्यांश में तुलसी ने अपनी दास्य भक्ति के अनुरूप राम की आराधना की है।

व्याख्या - तुलसी राम की आराधना करते हुये कहते है कि मेरे हृदय को तुम्हारे बिना कही ठौर नहीं है। मैं तो तुम्हारा नाम रटता हूँ, यमलोक क्यों जाऊँगा। तुम्हारी कृपा से मैं तुम्ही का स्मरण करता हूँ। तुम्हारी कृपा से तो अजामिल जैसे अपराधी भी मुक्ति पा गये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

स्थान में प्रश्न ... अतिरिक्त कुछ

(... do not write ... except the ... number in ...e)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष :

① तुलसी की दास्य भक्ति का एक अन्यत्र उदाहरण है -

" राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो।
राम सो खरो है कौन, मोसो कौन खोटो।"

② दास्य भक्ति का यही रूप सूर तथा कबीर के यहाँ भी दिखता है -

" मेरी कौन गति ब्रजनाथ।" (सूर)
" मेरा मुझमें कुछ नहीं।" (कबीर)

③ भाषा - अवधी

④ छंद - कवित्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) आइ न सकौं तुझ पैं, सकूँ न तुझ बुझाइ।
जियरा यौंही लेहुगे, बिरह तपाइ तपाइ।।

संदर्भ - प्रस्तुत साखी निर्गुण संतकाव्यधारा के कवि कबीर की साखियों के संकलन 'विरह को अंग' से ली गई है जिसका संकलन श्यामसुंदर दास ने किया है।

इस साखी में कबीर ने ईश्वर के विरह की तीव्रता को वर्णित किया है।

व्याख्या :- कबीर कहते है कि हे ईश्वर क्या इसी तरह विरह की अग्नि में जलाकर मेरे प्राण हर लोगे। मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता हूँ तो तुम आ कर मेरे विरह की अग्नि को बुझा दीजिए।

विशेष.

① कबीर के काव्य का सबसे सुन्दर पक्ष उसी समय दिखाई देता है, जब वो विरह में ईश्वर को याद करते है। उनके विरह की तीव्रता का एक अन्य उदाहरण है -

अंखड़िया झाई पडी, पथ निहारि-निहारि।
जिह्ड़िया छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ

do not write except the number in space)

② विरह का यही स्तर मीरा के काव्य में भी दिखाई देता है जब वे कहती हैं-

" हे री मैं तो दरद दीवाणी,
मेरो दरद न जाणे कोइ।"

③ कबीर की भाषा के संबंध मे द्विवेदी जी ने प्रशंसा करते हुये उन्हें वाणी का डिक्टेटर कहा है। प्रस्तुत साखी में इसी सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस बोलै पिउ पीऊ।
अधिक काम दगधै सो रामा। हरि जिउ लै सो गएउ पिय नामा।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीचि भीजि तन चोली।
सखि हिय हेरि हार मैन मारी। हहरि परान तजै अब नारी।
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा।
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक समुझि नारि मुख बोला।
प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव चात्रिक कै भाखा।
आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यावतरण अवधी के अरघान जायसी द्वारा रचित पदमावत के 'नागमती वियोग' खंड से अवतरित है।

इस पद्य में जायसी ने नागमती के विरह की तीव्रता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

व्याख्या : नागमती कहती है कि प्रियतम के वियोग में मेरा हृदय पपीहे की भाँति पीउ-पीउ करता है। जब से तोता मेरे पति को ले कर गया है तब से कामाग्नि बहुत बढ़ गई है।

नागमती अपने विरह की तीव्रता का वर्णन करते हुये कहती है कि विरह का बाण मुझे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ

do not write
except the
number in
ce)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ऐसे लगा गया है, जिससे मेरे रक्त से मेरी चोली भीग गई है तथा मैं हिल-डुल नहीं पा रही हूँ।

सखियाँ नागमती की स्थिति को देखकर कहती है कि कामदेव का इस पर प्रभाव हो गया है अब यह प्राण त्याग देगी। क्षण भर के लिए ~~श्वास~~ श्वास आता है किन्तु आगते ही क्षण निराशा मिलती है। पानी डालकर, पंखे से हवा करने पर नागमती होश में आकर कहती है कि मेरे प्रियतम से मिलने जा रहे प्राणों को क्यों रोक लिया।

मेरे विरह की अग्नि से उठने वाली ~~धुआँ~~ लपटो से मेरे प्राण रूपी हंस के पंख जल गये और वह उड़ नहीं सका अर्थात् मेरे प्राण मुझ में ही रह गये।

विशेष

① विरह के बारहमासा वर्णन जायसी की विशिष्टता है। जो इस उदाहरण के माध्यम से दर्शाया है
"जेठ जरै जग बहै लुवारा।"

② ठेठ अवधी की मिठास जायसी की भाषा की विशेषता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश 'असाध्य वीणा' कविता से लिया गया है, इसके कवि 'अज्ञेय' है।

ये पंक्तियाँ राजा ने प्रियंवद को उस से पूर्व कलाकारों के असफल होने के संदर्भ में कही।

व्याख्या :- राजा वीणा को साधने मे असफल अपनी कलावन्तों के बारे में प्रियवंद से कहता है कि इस वीणा को साधने मे असफलता ~~होना~~ उनकी विद्या तथा घमण्ड के चूर होने के समान है। उनकी इसी असफलता ने इस वीणा का नामकरण 'असाध्य वीणा' कर दिया।

~~फिर~~ राजा आगे प्रियवंद को आत्म-विश्वास दिलाते हुये कहते है कि मुझे विश्वास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है कि इस वीणा का निर्माता व्यर्थ नहीं था। उसने इस वीणा को ध्वनि/संगीत उत्पन्न करने के उद्देश्य से ही बनाया था किन्तु यह तभी संगीतमय होगी जब कोई सिद्ध इसे साधने का प्रयास करेगा।

विशेष

① प्रस्तुत पद्य में अज्ञेय कला के सृजन की अर्हता को स्पष्ट करते है। केवल ज्ञान तथा गुण वह अर्हता नहीं है। स्वयं ~~के~~ के अहं का विलयन वह क्षमता है।

" उस स्पंदित सन्नाटे मे,
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा,
नहीं स्वयं को शोध रहा था।"

② कला के समक्ष आत्मनिवेदन का भाव, ईश्वर के प्रति आत्मनिवेदन के समान है. जो कबीर, तुलसी तथा सूर के काव्य में है।

" मेरी कौन गति ब्रजनाथ।"

③ प्रस्तुत पद्य की भाषा तद्भव तथा तत्सम का अद्भुत समन्वय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) धर्म का है एक और रहस्य भी,
अब छिपाऊँ क्यों भविष्यत् से उसे?
दो दिनों तक मैं मरण के भाल पर
हूँ खड़ा, पर जा रहा हूँ विश्व से।
व्यक्ति का है धर्म तप, करुणा, क्षमा,
व्यक्ति की शोभा विनय भी त्याग भी,
किन्तु, उठता प्रश्न जब समुदाय का,
भूलना पड़ता हमें तप-त्याग को।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'कुरुक्षेत्र' से लिया गया है।

इस कविता में 'दिनकर' ने युद्ध दर्शन को स्पष्ट करते हुये उसकी नैतिकता तथा अनैतिकता को स्पष्ट किया है।

व्याख्या :- भीष्म अर्जुन से कहते है कि धर्म के रहस्य को अब छिपा लेने का कोई महत्व नहीं रह जाता। अब मैं इस विश्व से विदा लेने वाला हूँ अत: तुमको धर्म का रहस्य बताना चाहता हूँ।

भीष्म कहते है कि तप, करुणा, क्षमा ये सभी गुण व्यक्ति का धर्म है। त्याग तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विनम्रता से व्यक्तित्व ~~क~~ शोभायमान होता है। किन्तु समुदाय पर जब युद्ध जैसा कोई खतरा हो तो व्यक्ति को अपने धर्म का त्याग करना पड़ता है।

विशेष :-

① दिनकर ने अपनी कविता में युद्ध की नैतिकता को स्पष्ट करते हुये कहा कि स्वत्व का हरण तथा पाप का साथ युद्ध को आमंत्रण है।

② व्यक्ति के धर्म के लिए प्राचीनकाल से ही अनेक प्रतिमान निर्धारित किये हैं। तुलसी के काव्य में भी विनय, त्याग आदि को व्यक्ति का धर्म स्पष्ट किया है।

③ भाषा सहज तथा सुपाठ्य है।

प्रासंगिकता - प्रस्तुत पंक्तियों में समुदाय की रक्षा के लिए धर्म का त्याग करना वर्तमान में भी प्रासंगिक है। भारत द्वारा जम्मु-कश्मीर में आतंकवादियों से संघर्ष इसका उदाहरण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. (क) 'असाध्य वीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में असाध्य वीणा की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिये। 20

'असाध्य वीणा' में वीणा से संगीत प्रकट होने तथा पुनः शांत हो जाने की सम्पूर्ण प्रक्रिया मौन पर आधारित होने के कारण इसे 'मौन से स्वर' तथा 'स्वर से मौन' की यात्रा कहा गया।

वस्तुतः असाध्यवीणा का नाम ही इसकी विशेषता है अर्थात् जब से यह वीणा निर्मित हुई है तब से मौन ही रही है कोई भी कलावन्त इससे संगीत प्रकट नहीं कर सका। राजा की चिन्ता से यह स्पष्ट है -

"हार गये मेरे सब कलावन्त
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर
कोई ज्ञानी गुनी आज तक इसे न साध सका।"

फिर प्रियंवद के द्वारा वीणा को साधने की प्रक्रिया भी मौन से युक्त है -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

" उस स्फटिक सन्नाटे में,
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा,
नहीं, स्वयं को शोध रहा था।"

वीणा जब से निर्मित हुई है तब से मौन रहने के पश्चात् इससे संगीत की उत्पत्ति की प्रक्रिया भी मौन है। इसी मौन साधना में जब प्रियंवद स्वयं को वीणा को सौंप देता है तब महामौन में समाहित हो जाता है। इसी अहं के विलयन की प्रक्रिया में संगीत की उत्पत्ति होती है।

" अवतरित हुआ संगीत
स्वयंभू,
इसमें सोता है अखण्ड
ब्रह्म का मौन
अशेष प्रभामय।"

वीणा से संगीत की उत्पत्ति के पश्चात् सम्पूर्ण सभा मौन हो गई तथा सब इसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अपने- अपने व्यक्तित्व के अनुसार महसूस करने लगे। वीणा से संगीत की उत्पत्ति के पश्चात् यह कुछ क्षण पश्चात् पुनः मौन हो गई।

तब प्रियवंद वीणा की धुन के रहस्य को उद्घाटित करते हुये कहता है-

"सुना आपने जो कुछ मेरा नहीं,
न वीणा का था
वह तो उस सबकुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
जो शब्दहीन
सब में गाता है।"

अर्थात् वीणा को साधने के क्रम में प्रियवंद मौन यात्रा के माध्यम से उस परम्परा को ग्रहण कर सका, जिसके माध्यम से वीणा में संगीत का विकास हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ ... ें।
... e do not write ... ng except the ... on number in ... ace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार मौन वीणा से स्वर की उत्पत्ति तथा उसके पुनः मौन हो जाने की यह पूरी यात्रा एक मौन यात्रा के समान है, जिसका स्वरूप तथा प्रभाव भी मौन ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप एवं औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फैंटेसी उस कल्पना को कहा जाता है जिसके माध्यम से ~~वास्~~ वास्तविक जीवन की अपूर्णताओं को काल्पनिक धरातल पर प्रकट किया जाता है तथा उनकी पूर्ति की जाती है।

'ब्रह्मराक्षस' में मुक्तिबोध ने फैंटेसी का प्रयोग शिल्प के स्तर पर किया है न कि छायावाद की भांति विषयवस्तु के स्तर पर।

मुक्तिबोध ने फैंटेसी का प्रयोग क्यों किया। यह उन्होंने स्वयं स्पष्ट करते हुये लिखा है कि फैंटेसी शिल्प के द्वारा भी यथार्थ की अनुभूति संभव है।

उनके अनुसार उनकी कविताएं लंबी न हो इसलिए फैंटेसी का प्रयोग किया है क्योंकि ∵ यथार्थ के तत्व परस्पर गुंफित होते है तथा सम्पूर्ण यथार्थ परस्पर गतिशील होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अत: वर्णन की प्रधानता न हो इसलिए फैंटेसी शिल्प का प्रयोग किया।

फैंटेसी शिल्प का प्रयोग करने से मुक्तिबोध की मार्क्सवादी क्रांति चेतना का प्रक्षेपण कविता में संभव हो पाया है। वे 'अंधेरे में' कविता में लिखते हैं-

" कहीं गोली चल गई।
कहीं आग लग गई।"

फैंटसी का प्रयोग उन्होंने इसलिए भी किया है ताकि मानसिक अन्तर्द्वंद्व को प्रकट करते हुये उनके काव्य में कल्पनाशीलता तथा वायवीयता हावी न हो जाये। इसी आत्म-संघर्ष को उन्होंने फैंटसी के माध्यम से 'ब्रह्म राक्षस' तथा 'अंधेरे में' प्रकट किया है।

" खूब ऊँचा जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ
वे अभ्यान्तर निराले लोक की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक चढ़ना और उतरना
पुन चढ़ना और लुढ़कना।"

फैंटेसी का प्रयोग करने से उनकी कविताओं में वह नाटकीयता भी आ गई है, जो साधारणत: अभिनय के द्वारा आती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि फैंटेसी शिल्प का प्रयोग मुक्तिबोध की अपनी विशिष्टता है, जो उनकी कविताओं में आत्मचेतस तथा विश्वचेतस के संदर्भ में दिखती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ase do not write
thing except the
stion number in
space)

(ग) 'सृजनात्मक रहस्यवाद' के परिप्रेक्ष्य में 'असाध्य वीणा' कविता की अंतर्वस्तु का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहस्यवाद से तात्पर्य किसी अलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम का भाव या अलौकिक सत्ता को स्वीकारना है।

अज्ञेय ने 'असाध्य वीणा' में सृजनात्मक रहस्यवाद को वीणा साधने की प्रक्रिया मे दर्शाया है। जब प्रियंवद मौन साधनारत होकर वीणा को साधने का प्रयास करता है

" उस स्पंदित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा
नहीं स्वयं को शोध रहा था।"

वीणा को साधने की प्रक्रिया में वह ध्यानमग्न होकर ~~वैदिक~~ योगियों की भाँति कुण्डलिनी - महाकुण्डलिनी मिलन की प्रक्रिया की भाँति अवस्था धारण करता है।

इसी अवस्था में वह उस वृद्ध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को महसूस कर पाता है जिससे वीणा का निर्माण हुआ है। तथा उस संगीत को भी सुन पाता है।

अर्थात् ध्यानमग्न होकर वह उस ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करता है तथा उसको ~~को~~ सबकुछ अर्पित करता है। जिस प्रकार साधना के माध्यम से परम शून्य की प्राप्ति होती है उसी तरह वीणा से ~~[illegible]~~ संगीत की उत्पत्ति होती है।

"अवतरित हुआ संगीत
स्वयंभू
जिसमें सोता है अखंड
ब्रह्म का मौन
अशेष प्रभामय।"

साधना के माध्यम से जब व्यक्ति परम तत्व की उपस्थिति महसूस कर लेता है ~~से~~ ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~। उसी प्रकार वीणा से संगीत की उत्पत्ति ने रसानुभूति के माध्यम से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न या के अतिरिक्त कुछ लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सभा को महाशून्य की अनुभूति कराई जिसका सब पर भिन्न-भिन्न प्रभाव हुआ।

" डूब गये सब एक साथ
सब अलग-अलग पार तिरे।"

इस प्रकार सृजनात्मक रहस्यवाद के माध्यम से अज्ञेय सृजन तत्व को ब्रह्म के समान महत्व देते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) व्यक्ति और समाज के संबंध को लेकर अज्ञेय के क्या विचार हैं? 'असाध्य वीणा' कविता के आधार पर बताइये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय के काव्य के संबंध में अक्सर यह विवाद उठता है कि उनका काव्य समाज से जुड़ाव नही रखता किन्तु यह निष्कर्ष उनके काव्य की गहराई तथा परिस्थितियो से अनभिज्ञता दर्शाती है।

वस्तुत: अज्ञेय जिस समय के कवि है उस समय व्यक्ति तथा समाज के संबंधो को लेकर टकराव की स्थिति थी। एक ओर मार्क्सवादी व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व को नकार रहे थे वहीं दूसरी ओर अस्तित्ववादी व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

अज्ञेय के विचार दोनो ही तरह की अतिवादिता से बचते हुये समन्वित है। उन्होंने व्यक्ति और समाज का संबंध अपनी कविता 'नदी के द्वीप' में स्पष्ट तौर पर व्यक्त किये है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

" हम हैं नदी के द्वीप
हम नहीं चाहते कि स्रोतस्विनी हमें छोड़ बह जाये
वह हमें आकार देती है।"

~~इसी~~ इससे स्पष्ट है कि अज्ञेय समाज के महत्त्व को व्यक्ति के व्यक्तित्व का हिस्सा मानते हैं। उनकी ~~कविता~~ ~~है~~ कविता में भी प्रियंवद वीणा को साधने में इसीलिए सफल हो सका क्योंकि वह सामाजिक परम्परा को समझ सका था।

" श्रेय नहीं मेरा कुछ।
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य मे
वीणा के माध्यम से
मैंने स्वयं को सब कुछ को सौंप दिया था।"

~~ह~~ किन्तु ~~दू~~ दूसरी तरफ व्यक्ति की स्वतंत्रता के भी पक्षधर हैं। वे जैनेन्द्र की भाँति अपने पात्रों को स्वतंत्रता की चाह से युक्त करते हैं किन्तु यह स्वतंत्रता वे

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'समाज में' चाहते हैं 'समाज से' नहीं।

"किन्तु हम बहते नहीं
क्योंकि बहना रेत होना है,
हम बहेंगे तो रहेंगे नहीं।"

यह प्रभाव असाध्य वीणा से संगीत की उत्पत्ति की स्थिति में सभा में उपस्थित सभी व्यक्तियों पर पड़े अलग-अलग प्रभावों के संदर्भ में देखा जा सकता है।

"डूब गये सब एक साथ
सब एकाकी अलग-अलग पार तिरे।"

वीणा का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर उसके व्यक्तित्व के अनुसार पड़ा। राजा ने ईर्ष्या, चाटुकारिता, जैसे अवगुणों को त्याग दिया तो रानी क्षणिक सौंदर्य की महत्वहीनता को समझ गई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"उठ गई सभा, सब अपने काम लगे।
युग पलट गया।"

इस तरह स्पष्ट है कि अज्ञेय व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर हैं किन्तु वह स्वतंत्रता सामाजिक दायरों के भीतर हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

नागार्जुन मार्क्सवादी विचारधारा के कवि है। अतः जनसाधारण से जुड़ाव तथा उनकी समस्याओं का चित्रण उनके काव्य की विशेषता है।

वस्तुतः नागार्जुन की कविता चाहे वह 'अकाल और उसके बाद' हो या 'हरिजन गाथा' जनसाधारण की समस्याओं को ही उठाया गया है। हरिजन गाथा में एक प्रसंग है -

'रोता हूँ लिखता जाता हूँ
कवि को बेकाबू पाता हूँ।'

'अकाल और उसके बाद' कविता मे वे स्पष्ट करते है कि अकाल केवल प्राकृतिक घटना नहीं है बल्कि रेणु के खम्हार चक्र तथा प्रेमचन्द की महाजनी सभ्यता के शोषण का ही परिणाम है। नागार्जुन अकाल को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केवल मानव तक ही सीमित नहीं कर देते बल्कि मानवेतर प्राणियों तक भी उनकी संवेदना जाती है।

~~बादलों को~~ हरिजन गाथा में उन्होंने दलितों पर हुये अत्याचार को न केवल देखा बल्कि उसे महसूस भी किया। इससे स्पष्ट है कि उनकी कविताओं में वे जनसामान्य से जुड़े रहना चाहते है

किन्तु नागार्जुन जड़ मार्क्सवादी नहीं है। वे मार्क्सवाद की यांत्रिकता से बचते हुये गेहूँ तथा गुलाब दोनों को समान रूप से देखते है।

एक ओर कानी कुतिया का प्रयोग कर वे उदात्त वर्ग की उपेक्षा करते है तो दूसरी ओर हिमालय के सौंदर्य का वर्णन कर उदात्त को महत्व भी देते है। 'अकाल और उसके बाद' में छिपकली तथा चूहे को सम्मिलित कर छायावादी औदात्य का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खंडन करते है तथा यथार्थ का अंकन करते है तो वही धूलरी और 'बादलो' को घिरते देखा है' में कल्पनाओ की धता भी बताते है।

"कहाँ गया धनपति कुबेर,
कहाँ गई उसकी वह अलका।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि नागार्जुन कबीर की भाँति सुने हुये की ~~बजाय~~ बजाय देखे हुये यथार्थ को प्रस्तुत करते है तथा किसी भी यांत्रिकता से बचते हुये सामान्य तथा उदात्त को समान महत्व देते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधुनिक कविताओं में बिम्ब का अत्यधिक महत्त्व है। इसीलिए आधुनिक कविता को बिम्बों की श्रृंखला भी कह दिया जाता है। 'मुक्तिबोध' की कविताओं के बिम्ब आधिक्य के कारण 'बिम्बों का नगर' कहते है।

मुक्तिबोध ने स्वयं ही अपनी कविताओं के बिम्ब विधान के संदर्भ में कहा है कि -

" मेरी ये कविताएँ
भयंकर हिडिम्बा हैं,
वास्तव की विस्फारित प्रतिमाएं,
विकृताकृति बिंबा है।"

आचार्य शुक्ल ने 'कविता क्या है' निबंध में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि " कविता में केवल अर्थग्रहण ही नहीं, बिम्ब ग्रहण भी अपेक्षित है।" इसी आधार पर मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में बिम्बों की श्रृंखला प्रस्तुत की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" शहर के उस तरफ खंडहर की ओर
परित्यक्त सूनी बावड़ी।"

मुक्तिबोध ने अपने बिम्ब विधान के अन्तर्गत मानसिक द्वंद्व को भी इस तरह प्रस्तुत किया है कि वह एक चलचित्र की भाँति प्रस्तुत होता है -

" खूब ऊँचा जीना साँवला।
उसकी अंधेरी सीढ़ियां,
वे अभ्यांतर निराले लोक की,
एक चढ़ना औं उतरना।"

मुक्तिबोध के बिम्ब विधान की परिपक्वता उनके स्थिर बिम्बों में दिखाई पड़ती है। किन्तु उनके द्वारा गतिशील तथा श्रव्य बिम्बों का प्रयोग उनकी विशिष्टता है।

" बावड़ी को घेर
डालें खूब उलझी हैं
खड़े हैं मौन औदुम्बर।" (स्थिर बिंब)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध के द्वारा बिम्बों का प्रयोग उनके काव्य को नाटकीयता भी प्रदान करता है क्योंकि पात्रों द्वारा (आंतरिक तथा बाहरी व्यक्तित्व) आत्मसंघर्ष को उन्होंने बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जो नाटक में अभिनय के समान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Section–B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यह पंच नहीं हैं, राच्छस हैं, पक्के राच्छस। यह सब हमारी जगह-जमीन छीनकर माल मारना चाहते हैं। डांड तो बहाना है। समझाती जाती हूँ, पर तुम्हारी आंखें नहीं खुलतीं। तुम इन पिसाचों से दया की आसा रखते हो, सोचते हो, दस-पाँच मन निकालकर तुम्हें दे देंगे। मुंह धो रखो।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है जिसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द है।

इस गद्य में धनिया गाँव के पंच पटेलो द्वारा उन पर लगाये जुर्माने का विरोध कर रही है

व्याख्या : पंचों द्वारा आर्थिक दंड लगाये जाने पर उनके अनाज को जब्त कर लेने पर धनिया पंचों के निर्णय मे अनास्था प्रकट करती है तथा पंचों के निर्णय को सिर - आँखो पर रखकर पूरा कर रहे होरी को समझाने का प्रयास करती है कि यह कि पंच उनको कोई मदद नहीं करेंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

① प्रस्तुत पंक्तियों में होरी की सामन्ती शोषण के प्रति स्वीकार्यता की मानसिकता तथा धनिया की विद्रोही प्रकृति अभिव्यक्त हुई है।

② किसानों की इसी स्थिति को रेणु ने भी 'मैला आंचल' में दिखाया है, जहाँ तहसीलदार उनकी जमीन पर कब्जा कर लेता है।

③ भाषा सहज तथा सुपाठ्य है।

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी खाप पंचायतों द्वारा दिये जाने वाले अतार्किक निर्णय किसानों द्वारा मजबूरी में स्वीकारने पड़ते है, जो हमारी प्रशासनिक अक्षमता तथा न्यायिक लेटलतीफी का परिणाम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'दिव्या' उपन्यास से अवतरित है। इसके लेखक 'यशपाल' है।

इन पंक्तियों में ~~मारिश~~ स्थविर चिवुक पृथुसेन ~~अंशुमाला~~ को जीवन की विरक्ति त्यागने के लिए कहता है।

व्याख्या - ~~मारिश~~ चिवुक कहता है कि सुख तथा दुख एक चक्र की भाँति है जो निरन्तर चलता रहता है। इच्छाएँ दुख का मूल कारण है अतः इच्छाओं से मुक्ति ही एकमात्र उपाय है।

विशेष :

① उपर्युक्त प्रसंग बौद्ध दर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद से प्रभावित है जिसमें इच्छाओं की उत्पत्ति से ही दुख की उत्पत्ति होती है।

② जयशंकर प्रसाद ने स्कन्दगुप्त में देवसेना तथा कामायनी मे श्रद्धा के माध्यम से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सुख-दुख की क्षण भंगुरता को प्रकट किया है।

③ 'दिव्या' उपन्यास की भाषा इसकी ऐतिहासिकता के कारण तत्सम हो गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया। जो जोतेगा, जमीन उसकी है। जो जितना जोत सको, जिसकी जमीन मिले जोतो, बोओ, काटो। अब बाँटने का भी झंझट नहीं।... धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेतों में जिंदगी झूमेगी। आषाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो। ... नाचो रे! मादल बजाओ जोर-जोर से। पँचाय का नशा आज नहीं उतरेगा; जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाए, घने बादलों में नाचना बंद नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट, बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है।.. मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से ली गई है। इसके लेखक फणीश्वरनाथ रेणु है।

इन पंक्तियों में रेणु ने जमींदारी प्रथा की समाप्ति पर किसानो की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है।

भावार्थ :- गाँव के किसान खुशी से झूमते हुये जमींदारी उन्मूलन का इजहार करते है। किसान जमीनों पर मालिकाना हक पाकर जमींदार चक्र से मुक्त होने पर प्रसन्न है।

उनकी खुशी को उन्होंने स्थानीय गीतो तथा वाद्य यंत्रों से प्रकट किया। साथ ही प्रकृति भी अपने सौंदर्य की चमक को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बढ़ाकर उनकी खुशी मे सहयोग कर रही है।

विशेष -

① जमींदारी प्रथा तथा साहूकार चक्र का वर्णन गुप्तजी ने प्रस्तुत किया है। जिससे मुक्त होने पर यह खुशी स्वाभाविक थी।

"आता सारा अन्न महाजन के यहाँ अंत में।
अधपेट रह उन्हे फिर काँपना है हेमन्त में॥"

② रेणु ने अपनी लेखन शैली की परिपक्वता का उदाहरण प्रकृति को किसानो की खुशी में सम्मिलित कर दिया है।

③ रेणु की भाषा पूर्णिया के मेरीगंज की भाषा है, जो आंचलिकता की एक झलक प्रस्तुत करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) इसके बाद छोटे-छोटे दलों में बँटकर लोग आपस में बातचीत करने लगे। हाथों में क़ीमती गिलास थामे हुए कोई दल देश में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता कर रहा था, तो काई फैलती हुई अव्यवस्था पर। किसी के सोच और रोष का विषय था–देश का तेज़ी से गिरता हुआ नैतिक स्तर, तो किसी को दिन-ब-दिन बढ़ते हुए मूल्य परेशान कर रहे थे। रोगन-पॉलिश से चमकती हुईं, लक़दक़ कपड़ों में लिपटी स्त्रियाँ पुरुषों की हाँ में हाँ मिला रही थीं।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है। इसकी लेखिका मन्नू भंडारी है।

यह प्रसंग उस पार्टी का है जिसमें डीआइजी का प्रमोशन हुआ था तथा लोग लोकतंत्र की गिरती प्रतिष्ठा पर जश्न मना रहे थे।

व्याख्या - पार्टी में छोटे-छोटे गुट बन गये जो विभिन्न मुद्दों पर बहस कर रहे थे। कोई बढ़ते भ्रष्टाचार पर विचार प्रस्तुत कर रहा था तो कोई अव्यवस्था पर। गिरती हुई नैतिकता तथा महंगाई भी लोगों की वार्ता का विषय थी। इस वार्तालाप के वक्ता पुरुष थे तथा आभूषणों से युक्त महिलाएं हाँ में हाँ मिला रही थी।

विशेष
① मन्नू भंडारी ने इस प्रसंग के माध्यम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से व्यवस्था के दोगलेपन पर व्यंग्य किया है, जो दिखावे के लिए बिसु से संवेदना जताता है तथा रात्रि में पार्टी में व्यस्त।

② मन्नू भंडारी की भाँति ही मुक्तिबोध ने भी 'अंधेरे में' कविता में इसी प्रशासनिक विद्रूपता को चित्रित किया है।

③ लेखिका की भाषा सहज तथा सुपाठ्य होने के साथ गहरे व्यंग्यों से युक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश नई कहानियों के प्रतिनिधि संकलन की 'नन्हों' कहानी से लिया गया है। इसके लेखक धर्मवीर भारती है।

नन्हों के पति द्वारा दूसरी शादी करने के बाद उसकी सेवा के लिए नन्हो को ले जाने का प्रसंग है।

व्याख्या - नन्हो का पति उसे ले जाते हुये अहसान जताते हुये कहता है कि घर में दासी की तरह रहना पड़ेगा। मेरी नई दुल्हन की सेवा करना। उसके बच्चे का लालन-पालन करना। दासी की भांति रहती हुई उल्टा जवाब मत देना। वरना अभी सिर्फ कूबड़ निकला है फिर सीधा प्राण निकलेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① नारी के साथ दासी की भाँति व्यवहार एक दुनिया समानान्तर की कहानी 'सामान' में तथा पक्षपात के उपन्यास 'दिव्या' में भी इसी मार्मिकता से उपस्थित है।

②

प्रासंगिकता - उपर्युक्त पंक्तियाँ वर्तमान में भी ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी ही अधिक प्रासंगिक है, जहां शिक्षा तथा अधिकारो की जानकारी के अभाव में नारी अभिशप्त जीवन को मजबूर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबंध के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिये। 20

'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' भारतेन्दु युग के प्रमुख विचार प्रधान निबंधकार बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित है। इस निबंध में उन्होंने प्राचीनकाल से वर्तमान तक साहित्य में परिवर्तन को मानव के विकास से जोड़ा है।

वस्तुत: उन्होंने स्पष्ट किया है कि साहित्य का एकमात्र स्रोत जनता के विचारों की परिपक्वता है। आचार्य शुक्ल की भांति उन्होंने ने भी साहित्य को जनता की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिम्ब माना है।

वैदिककाल में मानव बिना किसी विचारों के जिस चीज से भयभीत हुआ उसे ईश्वर के पद पर प्रतिष्ठित किया तथा उसके रहस्यों से अनजान होकर साहित्य का हिस्सा बनाया। वैदिक साहित्य में सूर्य, पृथ्वी, नदी आदि के प्रति आस्था का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव इसी धारणा को पुष्ट करता है।

तत्पश्चात् मानव के वैचारिक विकास ने उसे सामाजिक व्यवस्था को संगठित करने के लिए प्रेरित किया। चूंकि वर्ण व्यवस्था ने समाज को विखंडित कर दिया था। अत: गुप्तकाल में साहित्य के माध्यम से समाज को एक करने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में मनुस्मृति जैसे सामाजिक विधान ग्रंथो तथा रामायण- महाभारत की रचना हुई।

जैसे-जैसे मानव के विचारों में परिपक्वता आई। उन्होने वैदिक ग्रंथों की प्रामाणिकता पर सवाल खड़े किये। इसका प्रमाण सिद्ध नाथ साहित्य में तो दिखता ही है भक्ति काल में पूर्ण मुखरता के साथ प्रकट भी हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धीरे-धीरे नवजागरण चेतना के पश्चात में वर्तमान साहित्य अपनी पूर्णता से युक्त है, जिसमें तर्कों को महत्त्व दिया जाता है तथा ब्रिटिश शासन की अराजकता, हमारी पूर्व परम्पराओं की अतार्किकता का चित्रण दिखाई देता है।

इस तरह मानव की वैचारिक परिपक्वता उसके साहित्य में भी परिपक्वता का संचार करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामचन्द्र शुक्ल ने श्रद्धा तथा भक्ति जैसे मनोविकारों का अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन अपने निबंध श्रद्धा- भक्ति में प्रस्तुत किया है।

~~श्रद्धा और भक्ति~~

'श्रद्धा-भक्ति' निबंध में वे सर्वप्रथम श्रद्धा को परिभाषित करते हुये लिखते है- "जन सामान्य के विपरीत किसी मनुष्य में विशिष्ट गुणों के विकास को देखकर जो स्थायी आनन्द भाव का विकास होता है, वह श्रद्धा है।"

श्रद्धा तथा प्रेम में अन्तर स्पष्ट करते हुये वे लिखते है कि ~~श्र~~ प्रेम में घनत्व अधिक है, श्रद्धा मे विस्तार। यहीं पर वे प्रेम को एकांतिक मार्ग स्पष्ट करते है तथा श्रद्धा को विस्तृत मनोभाव।

श्रद्धा के प्रकारों को भी वे बड़ी ही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूक्ष्मता के साथ प्रकट करते है। वे तीन प्रकार की श्रद्धा को स्पष्ट करते है-

(अ) प्रतिभा संबंधी (ब) शील संबंधी

(ग) साधन संबंधी

श्रद्धा तथा भक्ति में अन्तर से पूर्व भक्ति को परिभाषित करते है- " प्रेम तथा श्रद्धा का योग भक्ति है।" यही पर वे श्रद्धा को निष्क्रिय भाव तथा भक्ति को सक्रिय भाव के रूप में स्थापित करते है।

श्रद्धा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुये वे लिखते है कि " किसी व्यक्ति के प्रति श्रद्धा का भाव उसमें आत्मविश्वास का संचार करता है, जो समाज के लिए शुभ कर्म के लिए प्रेरित करता है।

श्रद्धा से संबंधित दोषो को भी शुक्ल जी ने अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे श्रद्धा की प्राप्ति के लिए किये जा रहे अनुचित प्रयासों की निन्दा करते हैं तथा श्रद्धांध व्यक्ति को मदांध की भाँति अहितकर मानते हैं।

इस प्रकार शुक्ल जी ने श्रद्धा-भक्ति के माध्यम से ~~श्रद्धा~~ प्रेम, श्रद्धा तथा भक्ति जैसे सूक्ष्म मनोविकारों की विस्तृत विवेचना कर हिन्दी साहित्य को एक नवीन विरासत प्रदान की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल के निबंधो के संबंध में यह विवाद का विषय रहा है कि उनके निबंध वस्तुनिष्ठ है या व्यक्तिनिष्ठ। किसी भी निष्कर्ष से पूर्व दोनो पक्षों का विश्लेषण आवश्यक है।

शुक्ल जी के निबंध उन प्रसंगों में वस्तुनिष्ठ दिखाई देते हैं जब वे वैज्ञानिक शैली का प्रयोग करते हुये सूक्ष्म मनोविकारो को प्रस्तुत करते है। चूंकि मनोविकारों के संबंध मे विचार वस्तुनिष्ठता धारण करते है।

इसके अतिरिक्त सटीक शब्दों का प्रयोग, शब्दों की मितव्ययिता तथा विचारो की क्रमबद्धता उनके निबंधो को वस्तुनिष्ठता प्रदान करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे - "प्रेम तथा श्रद्धा का योग भक्ति है।"

"ज्यों-ज्यों प्रच्छन्नता बढ़ती जायेगी, कवि के लिए कवि कर्म का महत्व बढ़ता जायेगा।"

किन्तु शुक्ल जी के निबंधों में पर्याप्त व्यक्तिनिष्ठता की भी उपस्थिति है। जब वे उदाहरणों के माध्यम से साहित्यिक शैली का प्रयोग करते हुये विचार स्पष्ट करते है तब उनके निबंध व्यक्तिनिष्ठ हो जाते है।

साथ ही हास्य व्यंग्य की दशा, आवेश की दशा, व्यंग्य, मुहावरों के प्रयोग के दौरान उनके निबंध व्यक्तिनिष्ठता का प्रदर्शन करते हैं।

जैसे - "भक्ति हृदय से की जाती है। बुद्धि से भक्ति करना वैसे ही जैसे नाक से खाना।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सारांशतः कहा जा सकता है कि शुक्ल जी एक परिपक्व निबंधकार थे, जो विचारों की स्पष्टता तथा लेखन की प्रौढ़ता के कारण व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ का बेहतर समन्वय करते हैं अर्थात् उनके निबंध वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ हैं न कि वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिनिष्ठ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation